9

''प्रभु पहचानता है''

(1:17-20)

यूहन्ना ''परमेश्वर के वचन और यीशु की गवाही के कारण पतमुस नामक टापू में था'' (1:9ख)। यदि मैं उसकी जगह होता, तो मैं घबराया हुआ होता, घबराया हुआ इसलिए क्योंकि मैं अब प्रचार नहीं कर सकता था, घबराया हुआ इसलिए क्योंकि मैं अपने साथी मसीहियों के साथ नहीं हो सकता था, घबराया हुआ इसलिए क्योंकि मैं उन्हें उनकी परीक्षाओं में सांत्वना नहीं दे सकता था। फिर, प्रभु के एक दिन, ''उसने एक आवाज़ यह कहते हुए सुनी, 'तू [अपने] लोगों के साथ नहीं हो सकता, परन्तु तू उन्हें एक संदेश भेज सकता है; यह वह संदेश है जो मैं तुझे दूंगा।' ''[1] मुड़कर उसने देखा कि ''मनुष्य के पुत्र के समान कोई'' अर्थात साठ वर्ष पहले का उसका मित्र और साथी, यीशु सासरी था, परन्तु अब वह अपनी पूरी महिमा में था!

पिछले पाठ में, हमने यूहन्ना को दिए यीशु के दर्शनों का अध्ययन आर भ किया था, जो उसे दिए जाने वाले कई दर्शनों में से पहला था। हमने सुझाव दिया था कि दर्शन से यह शिक्षा मिलती है कि यीशु *सामर्थी* है, परन्तु फिर हमने उसको ''यीशु में *जानने* की शक्ति और उस ज्ञान के आधार पर *कार्य* करने की शक्ति है'' विस्तार दिया था। इस पाठ में, हम यीशु के पास जानने की शक्ति है, के विचार के आधार पर काम करेंगे।

पूरी बाइबल में प्रभु को सब कुछ जानने वाले के रूप में दिखाया गया है। अब्राहम के बारे में, परमेश्वर ने कहा था, ''मैं उसे जानता हूं'' (उत्पत्ति 18:19)। नहूम नबी ने कहा था कि प्रभु ''अपने शरणागतों की सुधी र ाता है'' (नहूम 1:7ख)। यीशु ने कहा, ''अच्छा चरवाहा मैं हूं; और मैं अपनी भेड़ों को जानता हूं'' (यूहन्ना 10:14)। पौलुस ने गलातिया के लोगों को बताया था, ''... तुम ने परमेश्वर को पहचान लिया बरन परमेश्वर ने तुम को पहचाना'' (गलातियों 4:9क)। तीमुथियुस को लिखते हुए, उसने कहा, ''प्रभु अपनों को पहिचानता है'' (2 तीमुथियुस 2:19ख)। इस पाठ का शीर्षक इसी आयत से लिया गया है: ''प्रभु पहचानता है।''

अनुवाद हुए शब्द ''पहचानता'' का अर्थ कई बार तथ्यों को जानने से कहीं बढ़कर दिया जाता है। यह ''जानने वाले व्यक्ति और जानी जाने वाली वस्तु के बीच *एक स बन्ध* को दिखाता है''; कि ''जो जाना गया है वह उसके लिए जो जानता है *महत्व* का है।''[2] अध्याय 1 की अन्तिम आयतों का अध्ययन करते हुए, यीशु और उसके चेलों के स बन्ध की

चमक हर आयत में मिलेगी।

जब हम भयभीत होते हैं तो प्रभु को पता होता है (1:17)

जब यूहन्ना ने यीशु को अपनी महिमा में देखा, तो वह "उसके पैरों पर मुर्दा सा गिर पड़ा" (आयत 17क)। वह भय से बेजान सा हो गया। यीशु ने उससे कहा, "मत डर" (आयत 17ग)। यीशु के शब्दों का अनुवाद इस प्रकार हो सकता है, "डरता न रह।"[3]

जब प्रभु ने उसे न डरने के लिए कहा तो क्या यूहन्ना के मन में कोई पिछली बात याद आई ऐसी बात जिसमें वह ऊंचे पहाड़ की चोटी पर जाने के लिए यीशु और दो अन्यों के साथ जा रहा है? उस अवसर पर, यूहन्ना ने यीशु को मूसा और एलिय्याह के साथ रूप बदले हुए देखा था। एक चमकीले बादल ने उन्हें ढक लिया था और बादल में से एक आवाज़ आई, "यह मेरा प्रिय पुत्र है जिस से मैं प्रसन्न हूं इस की सुनो" (मत्ती 17:5)। यूहन्ना और दूसरे लोग "मुंह के बल गिर गए और अत्यन्त डर गए" (मत्ती 17:6)। फिर यीशु ने "उन्हें छूआ, और कहा, 'उठो', डरो मत" (आयत 7)।

प्रभु ने लोगों को कई बार यही संदेश दिया।[4] एक स्वर्गदूत ने जकर्याह को बताया, "भयभीत न हो" (लूका 1:13)। यही शब्द मरियम (लूका 1:30) और यूसुफ से कहे गए थे (मत्ती 1:20)। जब स्वर्गदूत चरवाहों को दिखाई दिया, तो इस संदेश का भाग "मत डरो" दिया गया था (लूका 2:10)। याइर की बेटी की मृत्यु के समय, यीशु ने उससे कहा था, "मत डर" (मरकुस 5:36)। यीशु ने तूफ़ान से घबराए हुए अपने चेलों को शांत करने के लिए पानी पर चलकर उनके पास आकर इन्हीं शब्दों का इस्तेमाल किया था (मत्ती 14:27)। अपने सभी अनुयायियों से मसीह ने कहा, "मैं तुम से जो मेरे मित्र हो कहता हूं, कि जो शरीर को घात करते हैं परन्तु उसके पीछे और कुछ नहीं कर सकते, उन से मत डरो" (लूका 12:4)। कुरिन्थुस में पौलुस को दर्शन देने के समय प्रभु के पहले शब्द थे, "मत डर" (प्रेरितों 18:9)।

भय मनुष्य की सामान्य स्थिति है। हम में से कई लोग अय्यूब जैसे हो सकते हैं, जिसने कहा था, "क्योंकि जिस डरावनी बात से मैं डरता हूं, वही मुझ पर आ पड़ती है, और जिस बात से मैं ाय ाता हूं वही मुझ पर आ जाती है" (अय्यूब 3:25)। कुछ लोग भविष्य से डरते हैं। कुछ वर्तमान से डरते हैं। कुछ डरते हैं कि लोगों को उनका अतीत पता चल जाएगा। बहुत से कारोबार में, विवाह में, जीवन में असफलता की स भावना से डरते हैं। मसीही लोग काम में, स्कूल में, घर में परीक्षा से डर सकते हैं। मसीही लोग सरकार से भी डर सकते हैं।

परमेश्वर नहीं चाहता कि हम डर पर विजय पाएं। *टाइम* पत्रिका ने एक आदमी की कहानी छापी जो मौत से डरता था।[5] इस आदमी को जानवरों को थपथपाते हुए कई बार चीचड़ों ने काटा था। फिर उसने लाईम रोग के विषय में सुना, जो हिरणों के चीचड़ों द्वारा फैलाया जाता है। उसके मन में इतना भय छा गया कि उसे रोग फैलाने वाले चीचड़ ने काट

लिया है और यह कि उसने वह रोग अपनी पत्नी को लगा दिया है। डॉक्टरों ने उसे आश्वासन दिया कि उसे लाईम रोग नहीं था और यह रोग एक से दूसरे व्यक्ति को नहीं हो सकता, परन्तु उसे उन पर विश्वास नहीं हुआ। अन्त में, अपने वहम के कारण उसने अपनी पत्नी और फिर अपनी जान ले ली। भय से तर्कसंगत सोच का नाश हो सकता है।

दाऊद ने हमें भय की दवा दे दी, जब उसने प्रभु से कहा, ''जिस समय मुझे डर लगेगा, मैं तुझ पर ारोसा र ूंगा'' (ाजन संहिता 56:3)। हमें यह पता होना चाहिए कि परमेश्वर हमारे परेशान मनों के बारे में जानता है। यीशु को मालूम था कि यूहन्ना डरा हुआ है, और उसे पता होता है जब हम डरे होते हैं। उसे मालूम होता है और वह हमारी स भाल करता है।

क्या यीशु को परवाह है, जब मेरा मन दु:खी होता है
इतना दु:खी कि कोई आनन्द और गीत न हो;
जब बोझ दबाते, और चिन्ताएं परेशान करती हैं
और जब रास्ता ल बा और थका देने वाला होता है,
हां; उसे परवाह है; मैं जानता हूं , उसे परवाह है
उसका मन मेरे दु:ख से दु:खी होता है ; ...
जब दिन थकाने वाले, ल बी रातें निराशाजनक होती हैं,
मैं जानता हूं मेरा उद्धारक मेरी परवाह करता है।[6]

प्रभु को पता होता है कि हमें कैसे ढाढ़स बंधाना है (1:17)

यीशु को मालूम होता है, जब हम अनिश्चितता से परेशान और कष्ट से सहमकर, भय से खामोश हो जाते हैं और उसे मालूम होता है कि हमें कैसे *सांत्वना* देनी है। ''वह उनकी भी सहायता कर सकता है, जिसकी परीक्षा होती है'' (इब्रानियों 2:18ख)।

यीशु यूहन्ना को डराने नहीं, बल्कि उसका साहस बढ़ाने के लिए आया था; सो उसने उसे न डरने के लिए कहा। बातें मन को चैन देने का काम कर सकती हैं। भविष्यवक्ता ने ''अच्छी-अच्छी और शान्ति की बातें'' सुनीं (जकर्याह 1:13)। परन्तु यीशु ने केवल बातें ही नहीं कीं। उसने यूहन्ना पर अपना हाथ रखा (आयत 17ख),[7] जैसे किसी दुखी मित्र के कंधे पर कोई अपना हाथ रखता है।

प्रभु आज भी हमें सांत्वना देता है: वह हमें अपने वचन की *प्रतिज्ञाओं* के द्वारा सांत्वना देता है। भजन लिखने वाले ने कहा था, ''मेरे दु: ा में मुझे शान्ति उसी से हुई है, क्योंकि तेरे वचन के द्वारा मैं ने जीवन पाया है'' (ाजन संहिता 119:50)। बाइबल सांत्वना तथा सामर्थ के वचनों से भरी पड़ी है।[8] पौलुस ने लिखा है, ''सो इन बातों से एक दूसरे को शान्ति दिया करो'' (1 थिस्सलुनीकियों 4:18)।

आज भी, प्रभु केवल बातें ही नहीं करता। वह अपने *लोगों* के द्वारा सांत्वना देता है। पौलुस ने कहा कि तीतुस के आने के द्वारा ''शांति देनेवाले परमश्ेवर ने'' उसे शांति दी (2

कुरिन्थियों 7:6)। उसने कहा कि ''सब प्रकार की शांति का परमेश्वर ... हमारे सब क्लेशों में शांति देता है; ताकि हम उस शान्ति के कारण जो परमेश्वर हमें देता है, उन्हें भी शांति दे सकें, जो किसी प्रकार के क्लेश में हों'' (2 कुरिन्थियों 1:3ग, 4)।

इसके अलावा, प्रभु हमें अपने *पूर्व प्रबन्ध के द्वारा की गई स भाल* से शांति देता है, जिसमें उनके लिए ''जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं ... सब बातें मिलकर भलाई ही उत्पन्न करती हैं; अर्थात उन्हीं के लिए जो उस की इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं'' (रोमियों 8:28)।

हमें शांति देने के उसके सभी ढंगों में से एक सबसे बहुमूल्य उसकी *उपस्थिति* है। दाऊद ने लिखा था, ''चाहे मैं घोर अन्धकार से ारी हुई तराई में होकर चलूं, तौ ी हानि से न डरूंगा, *क्योंकि तू मेरे साथ रहता है;* तेरे सोंटे और तेरी लाठी से मुझे शांति मिलती है'' (ाजन संहिता 23:4)। परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की है, ''मैं तुझे कभी न छोडूंगा, और न कभी तुझे त्यागूंगा'' (इब्रानियों 13:5ख)।

चार साल की मेलिंडा को ''तीन छोटे सूअरों'' की कहानी पसन्द थी और वह अपने पिता से हर रात यही कहानी सुनाने की ज़िद करती थी। उसका पिता बार-बार कहानी सुनाने से तंग आ गया और उसने उसे एक छोटे टेप रिकॉर्डर में उस कहानी को रिकॉर्ड कर लिया। उसने अपनी बेटी को दिखाया कि टेप किस प्रकार काम करती है और उसे बताया, ''अब तू हर रात को यह कहानी सुन सकेगी।'' कुछ रातें बीत जाने के बाद, उसने अपनी बेटी को उसकी कुर्सी के पास अपनी प्रिय पुस्तक हाथ में लिए उदास देखा। उसने कहा, ''मेलिंडा, अब तो तु हें पता है कि टेप कैसे चलानी है।'' उसने उत्तर दिया, ''हां पता तो है, पर मैं इसकी गोद में नहीं बैठ सकती।'' हमारा पिता केवल शांति की बातें ही नहीं देता बल्कि हमें अपनी उपस्थिति भी देता है।

प्रभु जानता है कि हमें क्या सुनना चाहिए (1:17, 18)

यूहन्ना को यह कहने के बाद कि ''मत डर'' यीशु ने वे शब्द कहे जिससे इस प्रेरित का भय छूमंतर हो जाता था। इन शब्दों को पढ़ने से पहले, अपने आप से ये प्रश्न पूछें: यूहन्ना को यीशु के होठों से क्या सुनना आवश्यक था? क्या उसे यह सुनने की आवश्यकता थी कि रोमी सेना कितनी ताकतवर है? क्या उसे यह सुनने की आवश्यकता थी कि मसीही लोगों पर सताव कम होने के बजाय कितना बढ़ सकता है? क्या उसे यह सुनने की आवश्यकता थी कि मसीह में उसे भाई और बहनें कैसे अपनी जान गंवाएंगे? नहीं। जो बातें उसे पहले से मालूम नहीं थीं, वह उनका अनुमान लगा सकता था। उसे यह सुनने की आवश्यकता थी कि प्रभु उनके सामने आने वाले भयंकर दिनों का सामना करने के लिए *सहायता* देगा। यूहन्ना और दूसरे मसीहियों को कही गई बातें सुनें: ''मैं प्रथम और अन्तिम और जीवता हूं। मैं मर गया था, और अब देख; मैं युगानुयुग जीवता हूं; और मृत्यु और अधोलोक की कुंजियां मेरे ही पास हैं'' (आयत 17ग, 18)।

रोमियों की शक्ति से घबराए हुए लोगों से, यीशु ने कहा, ''मैं प्रथम और अन्तिम[9] और जीवता हूं''[10] (आयतें 17ग, 18क)। ये शब्द यीशु के ईश्वरीय स्वभाव का स्मरण दिलाने का काम करते हैं, परन्तु इन्होंने इससे भी बढ़कर काम किया था। इनसे सुझाव मिला कि यीशु रोमी साम्राज्य से पहले से था और यह कि वह रोमी साम्राज्य के खत्म हो जाने के बाद भी रहेगा![11] डब्ल्यू. ए. क्रिसवैल ने लिखा है:

> जब पृथ्वी के सभी राजा भूमि की मिट्टी में सो जाएंगे और उनकी शक्ति जाती रहेगी, जब पृथ्वी के सभी यादगारी स्त ब सुबह के सूरज द्वारा हटाए कोहरे में बदल जाएंगे, जब पृथ्वी के सभी महान लोग कब्र में सो जाएंगे, वह तब भी जीवित होगा और वास करेगा और सदा सदा के लिए राज करेगा।[12]

यीशु की तुलना में, रोमी साम्राज्य ''मानो भाप के समान हो, जो थोड़ी देर दिखाई देती है, फिर लोप हो जाती है'' (याकूब 4:14ख)।

शहादत का सामना करने वालों के लिए, यीशु ने कहा, ''मैं मर गया था, और अब देख; मैं युगानुयुग जीवता हूं; और मृत्यु और अधोलोक की कुंजियां मेरे ही पास हैं'' (आयत 18)। ''था'' शब्द के महत्व को नज़रअन्दाज न करें। वह मर गया *था,* परन्तु अब मरा हुआ नहीं है; बल्कि वह सदा-सदा के लिए जीवित है! इसके अलावा, अब मृत्यु पर उसका नियन्त्रण है, क्योंकि उसके पास मृत्यु और अधोलोक की *कुंजियां* हैं। मृत्यु तथा अधोलोक इकट्ठे ही चलते हैं (देखें 6:8; 20:13, 14); जब किसी व्यक्ति की देह की मृत्यु होती है, तो उसकी आत्मा अधोलोक के संसार में चली जाती है।[13] यह कहकर कि उसके पास ''मृत्यु और अधोलोक की कुंजियां'' हैं, यीशु इस बात पर ज़ोर दे रहा था कि उसके पास उन लोगों की आत्माओं को छुड़ाने की सामर्थ है जो अपने विश्वास के कारण मर गए थे।[14] मृत्यु उन्हें नष्ट नहीं कर पाएगी और अधोलोक उन्हें रख नहीं सकेगा!

निराशा में पड़े मसीही लोगों से कहे यीशु के शब्द आज हमें शांति देने के लिए आवश्यक हैं। हम में से अधिकतर लोगों को यह सुनने की आवश्यकता नहीं है कि परिस्थितियां और खराब हो सकती हैं। हम अपनी आंखें खुली रखकर यह सब जान सकते हैं। हमें यह सुनने की आवश्यकता है कि परमेश्वर जीवन से अर्थ निकाल सकता है और सब कुछ सही हो जाएगा।

हमें आज भी यीशु को यह कहते सुनने की आवश्यकता है कि ''मैं प्रथम और अन्तिम और जीवता हूं'' (आयत 17ग, 18क)। हमारे लिए यह जानना आवश्यक है कि हमारे आस पास की उलझन केवल अस्थाई है और यह कि मसीह की सहायता से हम उसमें से निकल जाएंगे। जिम मैक्गुइन ने कहा था, ''हम उस मार्ग पर नहीं चलेंगे जिस पर वह नहीं चला। हमें उस भय का सामना नहीं करना पड़ेगा जो उसने नहीं किया। हमें ऐसे किसी शत्रु से लड़ना नहीं पड़ेगा जिसे उसने हराया न हो!''[15]

अन्त में, हमारा सामना "अन्तिम शत्रु" से होने पर (1 कुरिन्थियों 15:26), जब मृत्यु का भय अपना कुरूप सिर उठाएगा, तो हमें यीशु के शब्द सुनने की आवश्यकता है: "मैं मर गया था, और अब देख; मैं युगानुयुग जीवता हूं" (आयत 18ख)। किसी का जनाज़ा करते समय कब्र के पास प्रकाशितवाक्य 1:17, 18 से पढ़ना बर्टन काफ़मैन की आदत थी:[16]

> जब मैंने उसे देखा, तो उसके पैरों पर मुर्दा सा गिर पड़ा और उसने मुझ पर अपना दहिना हाथ रखकर यह कहा, कि मत डर; मैं प्रथम और अन्तिम और जीवन हूं। मैं मर गया था, और अब देख; मैं युगानुयुग जीवता हूं; और मृत्यु और [पाताल] अधोलोक की कुंजियां मेरे ही पास हैं।

प्रभु जानता है कि हमें क्या सुनना चाहिए!

प्रभु को मालूम है कि हमें क्या जानना चाहिए (1:19)

फिर यीशु ने प्रकाशितवाक्य लिखने के लिए यूहन्ना को दी गई आज्ञा को दोहराया और उसे विस्तार दिया: "इसलिए जो बातें तू ने देखी हैं और जो बातें हो रही हैं; और जो उसके बाद होने वाली हैं उन सब को लिख ले" (आयत 19)।

कई टीकाकारों का यह मानना है कि यह आयत प्रकाशितवाक्य की पुस्तक की रूपरेखा है: (1) "जो बातें तू ने देखी हैं," अध्याय 1 में देखे गए यूहन्ना के दर्शन को कहा गया; (2) "जो बातें हो रही हैं," 2 और 3 अध्यायों की बात है, जो कलीसियाओं के बारे में बताते हैं; और (3) "जो उसके बाद होने वाली हैं," जैसा कि 4 से 20 अध्यायों में दिखाया गया।[17] यह आयत पुस्तक की एक रूपरेखा हो *सकती* है; पर यदि यह है, तो इस में कई अपवाद हैं। उदाहरण के लिए, 4 और 5 अध्यायों वाला सिंहासन का दृश्य जो देखा गया और जो देखा जाना उन दोनों का भाग होना चाहिए। इसके अलावा, अध्याय 12 में दिखाया गया यीशु का जन्म ऐसी बात थी जो पहले ही हो चुकी थी, न कि कुछ ऐसा जो भविष्य में होने वाला था।

मुझे इस आयत को देखकर यह सुझाव देना अच्छा लगता है कि परमेश्वर चाहता था कि हम जान जाएं कि हम "जो बातें हो रही हैं" उन्हें देखकर ये समझ लें कि हम वास्तुस्थिति को नहीं बता सकते; हमें "जो उसके बाद होने वाली हैं" उन बातों को *भी* देखना चाहिए। प्रकाशितवाक्य यही तो है। यह हमें बताती है कि इस समय हमारी स्थिति चाहे कितनी भी बुरी क्यों न लगती हो, एक उज्ज्वल भविष्य हमारी प्रतीक्षा कर रहा है! यूहन्ना के पाठकों को यह पता होना चाहिए था, और *हमें* भी पता होना आवश्यक है। "जब आपको भविष्य का आश्वासन मिल जाए, तो वर्तमान स्थिर हो जाता है।"[18]

"इसलिए ... *लिख ले* " शब्दों पर ध्यान दें (आयत 19)। पहले, यूहन्ना को बताया गया था, "जो कुछ तू देखता है उसे *पुस्तक में लिख* " (1:11क)। प्रभु उत्साह की बातें

स्थाई रूप में डालना चाहता था ताकि हर युग में उसके चेले उन्हें पढ़कर आनन्दित हो सकें। जी. के. चैस्टर्टन ने लिखा है, "स्वर्ग के काम की ग भीरता आनन्द है।"[19] परमेश्वर का धन्यवाद हो कि उसे मालूम है कि हमें क्या जानना चाहिए और उसने इसे प्रकाशितवाक्य नामक पुस्तक में रख दिया है।

प्रभु जानता है कि हमें कैसे विनम्र रखना है (1:20)

हम पहले दर्शन को लगभग पूरा देख चुके हैं। एक आयत रहती है, जो प्रभु द्वारा दी गई व्या या है: "उन सात तारों का भेद, जिन्हें तू ने मेरे दहिने हाथ में देखा था, और उन सात सोने की दीवटों का भेद: वे सात तारे सातों कलीसियाओं के दूत हैं, और वे सात दीवट सात कलीसियाएं हैं" (आयत 20)। पिछले पाठ में हमने इस आयत में देखा था, पर मैं कुछ और विचार जोड़ना चाहता हूं।

अनुवाद हुए शब्द "भेद" का अर्थ "रहस्यपूर्ण" या "जिसे जाना न जा सके" नहीं है। बल्कि इस शब्द का इस्तेमाल पूरे नये नियम में उस अर्थ में किया गया है जो अतीत में ज्ञात नहीं था (अर्थात जिसकी समझ नहीं थी) परन्तु *अब* प्रकट हो चुका है। (कुछ उदाहरणों के लिए, देखें मरकुस 4:11; रोमियों 16:25; 1 कुरिन्थियों 15:51; इफिसियों 3:3, 4.) होमेर हेली ने यह अवलोकन किया है:

> इस शब्द का अर्थ यह नहीं है ... कि जिसे मनुष्य द्वारा समझा नहीं जा सकता, बल्कि इसका अर्थ है कि इसे केवल तभी समझा जा सकता है जब प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं के द्वारा पवित्र आत्मा की पहल से इसका अर्थ प्रकट किया जाए। यूहन्ना और जिन लोगों के नाम लिखा जा रहा था उन्होंने कुछ समझना आर भ करना था जो इससे पहले नहीं जान सकते थे।[20]

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक का अध्ययन करते हुए आयत 20 हमें हमारी जगह में रख देती है। पिछले पाठ में, मैंने यीशु की व्या या को समझने की कोशिश की थी कि "सात तारे सात कलीसियाओं के दूत हैं," और निष्कर्ष निकाला था कि हम निश्चित रूप से नहीं जान सकते हैं कि वे सात "दूत" कौन या क्या हैं। जीवन भर प्रकाशितवाक्य की पुस्तक का अध्ययन करने के बावजूद, जीवन के अन्त में आपके मन में प्रश्न रहेंगे। यह तो ऐसा है जैसे परमेश्वर चाहता हो कि हमें यह पता होना चाहिए कि हम चाहे कितने भी समझदार क्यों न हों, हम उसके जितने समझदार नहीं हो सकते! प्रकाशितवाक्य की पुस्तक यशायाह 55:9 में परमेश्वर के शब्दों का बिल्कुल सही चित्रण करती है: "क्योंकि मेरी और तु हारी गति में और मेरे और तु हारे सोच विचारों में, आकाश और पृथ्वी का अन्तर है।"

मैं किसी को प्रकाशितवाक्य का अध्ययन करने और वह सीखने के लिए कि परमेश्वर ने हमारे सीखने के लिए रखा है किसी को निरुत्साहित नहीं कर रहा। मैं केवल इतना कहता हूं कि "परमेश्वर अभिमानियों से विरोध करता है" (याकूब 4:6) और शायद प्रकाशितवाक्य

में हमारे दीन बनने के लिए उसने कुछ आयतें दी हैं। प्रभु हमें हम से अच्छी तरह जानता है!

सारांश

जब महिमा पाए प्रभु का दर्शन यूहन्ना की आंखों से ओझल होने लगा, तो सब कुछ बाहरी लग रहा था। डोमिशियन अभी भी सिंहासन पर था, बुजुर्ग यूहन्ना अभी भी पतमुस के टापु पर अकेला था, और मसीही लोग अभी भी मर रहे थे-परन्तु *यीशु* ने तो बोल दिया था! यूहन्ना के मन में क्या परिवर्तन आना चाहिए था! निश्चय ही उसकी आस जग गई थी, उसका आनन्द वापस आ गया था, और भविष्य उज्ज्वल दिखाई दे रहा था! प्रकाशितवाक्य की पुस्तक कुचले हुओं के लिए, जो जीवन से दुखी थे, जिन्होंने आशा छोड़ दी थी, लिखी गई। यह कहती है, "एक बेहतर कल आएगा! इस विचार को पकड़े रखो और परमेश्वर के निकट रहो!" यह पुस्तक *आपके* लिए लिखी गई थी।[21]

शिक्षकों तथा प्रचारकों के लिए नोट्स

इस और इससे पहले पाठ की मु य बातों "जो यूहन्ना को पता था" और "जो यीशु को मालूम है" का इस्तेमाल करते हुए मिलाया जा सकता है।

टिप्पणियां

[1]रेअ समर्स, *वरदी इज़ द लै ब* (नैशविल्ले: ब्रॉडमैन प्रैस, 1951), 104. [2]डब्ल्यू. ई. वाइन, *द एक्सपैंडड वाइन'स एक्पोज़िटरी डिक्शनरी ऑफ़ न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स,* सं. जॉन आर. कोहेलंगर्गर III विद जे स ए. स्वैन्सन (मिनियापुलिस, मिनेसोटा: बैथनी हाउस पब्लिशर्स, 1984), 628. [3]क्रिया वर्तमानकाल में है जो निरन्तर कार्य का संकेत है। [4]नये नियम के इन उदाहरणों के अलावा, प्रभु द्वारा लोगों को न डरने के लिए कहने के पुराने नियम में कई उदाहरण हैं। [5]"फैटल ओवररिएक्शन," *टाइम* (14 अगस्त 1989): 33. [6]फ्रैंक ई. ग्रेफ, "डज़ जीज़स केयर?" *सौंग्स ऑफ़ फ़ेथ एण्ड प्रेज़,* सं. आल्टन एच. हॉवर्ड (वेस्ट मोनरो, लुइसियाना: हॉवर्ड पब्लिशर्स, 1994)। [7]यीशु ने यूहन्ना को पांवों के बल खड़ा भी किया हो सकता है। [8]इस पाठ में आगे हम उनमें से कुछ शब्दों का उल्लेख करेंगे। [9]"प्रथम और अन्तिम" का अर्थ मु यतया "अल्फा और ओमेगा" वाला ही है (1:8; देखें 22:13)। पिता और पुत्र दोनों "प्रथम और अन्तिम" कैसे हो सकते हैं? यह स भव है क्योंकि वे पूर्णतया *एक* हैं (यूहन्ना 10:30)। [10]"जीवता" ईश्वरीयता का प्रमाण है (देखें यहोशू 3:10; भजन संहिता 42:2; 84:2; होशे 1:10)।

[11]यशायाह में "प्रथम और अन्तिम" शब्द परमेश्वर द्वारा अपने शत्रुओं को निकाल देने और अपने लोगों के छुटकारे के विचार से स बन्धित है (यशायाह 41:4; 44:6; 48:12)। [12]डब्ल्यू. ए. क्रिसवैल, *एक्सोज़िटरी सरमन्स ऑन रैवलेशन,* अंक 1 (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1962), 159. [13]देखें 20:13. "अधोलोक" शब्द का मूल अर्थ "अदृश्य" है और इसका इस्तेमाल देहहीन मृतकों के "अदृश्य संसार" के लिए किया जाता है। मरने पर यीशु की आत्मा अधोलोक में थी (प्रेरितों 2:31)। अधोलोक का सबसे विस्तृत विवरण लूका 16:19-31 में मिलता है। KJV में प्रकाशितवाक्य 1:18 (और 6:8; 20:13,

14) में "अधोलोक" के बजाय "नरक" शब्द है, जो उलझाने वाला है, क्योंकि KJV में *गेहन्ना* (दुष्टों के अनन्त निवास के लिए शब्द) का अनुवाद भी "नरक" किया गया है। अधोलोक दुष्टों का अनन्त निवास *नहीं* है। [14]यीशु यह भी कहा रहा था कि उसके पास अविश्वासियों को मृत्यु और अधोलोक के संसार में फैंकने की सामर्थ है (जैसा कि हम प्रकाशितवाक्य में आगे देखेंगे), परन्तु इस पद में मसीही लोगों के लाभ को ध्यान में रखा गया लगता है। [15]जिम मैक्गुइगन, *द बुक आफ़ रैवलेशन,* लुकिंग इन टू द बाइबल सीरीज़ (लब्बॉक, टैक्सस: इंटरनैशनल बिब्लिकल रिसोर्सेस, 1976), 39. [16]बर्टन काफ़मैन, *कमैंट्री ऑन रैवलेशन* (ऑस्टिन, टैक्सस: फर्म फाउंडेशन पब्लिशिंग हाउस, 1979), 34. फिलिप्प के अनुवाद (*द न्यू टैस्टामैंट इन मॉडर्न इंग्लिश,* सं. जे. बी. फिलिप्पस [न्यू यॉर्क: द मैकमिलन कं., 1958]) से "मृत्यु और कब्र" वाक्यांश का इस्तेमाल करते हुए उन्होंने ऐसे अवसर के लिए विकल्प दिया। [17]आयत 19 को तिहरे विभाजन के बजाय दोहरा विभाजन भी कहा जा सकता। इसका अर्थ हो सकता है कि "इस सबको देखने के बाद, (1) जो कुछ है और (2) जो होने वाला है, उसे लिख ले।" [18]वारेन डब्ल्यू. वियर्सबे, *द बाइबल एक्पोज़िशन कमैंट्री,* अंक 2 (व्हीटन, इलिनोइस: विक्टर बुक्स, 1989), 571. [19]अरल एफ़. पाल्मर, *1, 2, 3 जॉन एण्ड रैवलेशन,* द क युनिकेटर'स कमैंट्री सीरीज़, अंक 12 (डेलस: वर्ड पब्लिशिंग, 1982), 123. [20]होमेर हेली, *रैवलेशन: एन इंट्रोडक्शन एण्ड कमैंट्री* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1979), 115.

[21]यदि इस पाठ का इस्तेमाल प्रवचन के रूप में किया जाए, तो सुनने वालों को याद दिला दिया जाए कि प्रकाशितवाक्य की प्रतिज्ञाएं उन लोगों के लिए हैं, जिनका यीशु के साथ सही स बन्ध है। यदि किसी ने बपतिस्मा नहीं लिया है, तो उन्हें लेने के लिए कहें (मरकुस 16:16)। यदि वे मसीही हैं परन्तु विश्वासी नहीं, तो उन्हें वापस आने के लिए प्रोत्साहित करें (याकूब 5:16)।

विचार एवं चर्चा के लिए प्रश्न

1. बाइबल में, क्या "जानना" शब्द का संकेत *स बन्ध* से है? क्या इसे पुरुष और उसकी पत्नी के बीच स बन्ध से दिखाया जा सकता है? (देखें उत्पत्ति 4:1.)
2. बाइबल में उन लोगों के नाम बताएं जिन्हें प्रभु ने कहा, "मत डर।" क्या आप कभी डरे हैं? आपको क्या लगता है कि आप लोग सबसे अधिक किस बात से डरते हैं?
3. भय का इलाज क्या है?
4. बाइबल में आपकी पसन्दीदा "शांति की बात" क्या है?
5. कुछ ढंग बताएं जिनसे हम एक दूसरे को शांति दे सकते हैं।
6. क्या आप इस बात से सहमत हैं कि संसार की सारी समस्याओं को सुनना इतना महत्वपूर्ण नहीं है, जितना यह कि परमेश्वर किसी समस्या के लिए क्या कर सकता है (और करेगा)?
7. "हेडिस" क्या है?
8. "मृत्यु और अधोलोक की कुंजियां" वाक्यांश का क्या अर्थ है?
9. क्या *आपको* इस संदेश की आवश्यकता है कि अन्त में सब ठीक हो जाएगा?